✹ 06 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✹

✹ ज्ञान-

1] आबू भमि है सबकी सद्‌गति का स्थान। तुम ब्रह्माकुमारीज् के सामने ब्रैकेट में लिख सकते हो यह सर्वोत्तम तीर्थ स्थान है। सारे दुनिया की सद्‌गति यहाँ से होनी है। सर्व का सद्‌गति दाता बाप और आदम (ब्रह्मा) यहाँ पर बैठकर सबकी सद्‌गति करते हैं। आदम अर्थात् आदमी, वह देवता नहीं है। उसे भगवान् भी नहीं कह सकते।

2] एक बार पार्ट बजाया फिर 5 हजार वर्ष के बाद बजायेंगे क्योंकि फिर तुम सीढ़ी उतरते हो ना। तुम्हारी बुद्धि में अब आदि-मध्य-अन्त का राज़ है। जानते हो वह है शान्तिधाम अथवा परमधाम। हम आत्मायें भिन्न-भिन्न धर्म की सब नम्बरवार वहाँ रहती हैं, निराकारी दुनिया में। जैसे स्टार्स देखते हो हो ना- कैसे खड़े हैं, कुछ देखने में नहीं आता। ऊपर में कोई चीज़ नहीं है। ब्रह्म तत्व है। यहाँ तुम धरती पर खड़े हो, यह है कर्म क्षेत्र। यहाँ आकर शरीर लेकर कर्म करते हैं। बाप ने समझाया है तुम जब मेरे से वर्सा पाते हो तो 21 जन्म तुम्हारे कर्म अकर्म हो जाते हैं, क्योंकि वहाँ रावण राज्य ही नहीं होता है। वह है ईश्वरीय राज्य जो अब ईश्वर स्थापन कर रहे हैं।

3] जैसे सर्व शस्त्रमई शिरोमणी गीता है वैसे सर्व तीर्थो में श्रेष्ठ आबू है।

4] अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। पढ़ाई भी बहुत सहज है। कुछ भी खर्चा नहीं लगता है। तुम्हारी मम्मा को एक पाई खर्चा लगा? बिगर कौड़ी खर्चा पढ़कर कितनी होशियार नम्बरवन बन गई। राजयोगिन बन गई ना। मम्मा जैसी कोई भी नहीं निकली है।

5] तकदीरवान आत्मायें ही सच्ची सेवा द्वारा सर्व की आशीर्वाद प्राप्त करती हैं।

✹ योग-

1] मीठे बच्चे– याद की मेहनत तुम सबको करनी है, तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूँगा।

2] शिवबाबा को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनो। स्वर्ग शिवबाबा ने स्थापन किया ना। तो शिवबाबा को और सुखधाम को याद करो। पहले-पहले शान्तिधाम को याद करो तो चक्र भी याद आयेगा।

3] अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हों।

✹ धारणा-

1] तुम यहाँ 5 विकारों को जीतने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। तुम विजय के लिए, वह विनाश के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं।

2] अब तो बाप कहते हैं भाई-बहन भी नहीं, भाई-भाई समझना है। नाम-रूप से भी निकल जाना है।

3] अपने को आत्मा समझो, बेहद के बाप को याद करो।

4] बाप का फरमान है कि सोते समय दादा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा सब बाप के हवाले कर अपनी बुद्धि को खाली करो। बाप को देकर बाप के साथ सो जाओ। अकेले नहीं। अकेले सोते हो या व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते सोते हो तब व्यर्थ वा विकारी स्वप्न आते हैं। यह भी अलबेलापन है। इस अलबेलापन को छोड़ फरमान पर चलो तो व्यर्थ वा विकारी स्वप्नों से मुक्त हो जायेंगे।

✹ सेवा-

1] ---